# अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : नवमी – जैन सिद्धान्त प्रभाकर पूर्वार्द्ध ( परीक्षा 16 जुलाई, 2017 )

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

**परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–**

**सावधान**

**1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।**
**3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से कम लें।**

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

**जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–**

| प्रश्न क्र. | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | कुल योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्राप्तांक | | | | | | |
| पूर्णांक | 10 | 10 | 10 | 28 | 42 | 100 |
| पुनः जाँच | | | | | | |

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) ''अहाकम्मेहिं'' शब्द का अर्थ लिखिए -

(क) कार्य के अनुसार (ख) कर्मों के अनुसार

(ग) आधाकर्मी (घ) अहाकर्म ( )

(b) ''विणिहम्मंति' का अर्थ है-

(क) विनिघात को प्राप्त होते है (ख) मारे जाते हैं

(ग) घात किये जाते हैं (घ) उपर्युक्त सभी ( )

(c) 'विग्गहं' का अर्थ है -

(क) शरीर (ख) मध्यस्थ

(ग) कलह (घ) मकान ( )

(d) 'पावए' का अर्थ है-

(क) पावस (ख) प्रवास

(ग) अग्नि (घ) पाप ( )

(e) 'अजया' का अर्थ है-

(क) अयति (ख) असंयमी

(ग) अजितेन्द्रिय (घ) उपर्युक्त सभी ( )

(f) 'परत्था' का अर्थ है-

(क) दूसरे से (ख) दूसरे के लिए

(ग) परलोक में (घ) परस्पर ( )

(g) 'समया' का अर्थ है-

(क) समता (ख) समर्थता

(ग) सम (घ) समय ( )

(h) किस अंग का विच्छेद होने से वर्तमान में 11 अंग सूत्र हैं-

(क) आचारांग (ख) ऋषिभाषित

(ग) अंगचूलिया (घ) दृष्टिवाद ( )

(i) पाँचवें गुणस्थान में लेश्या पाई जाती है-

(क) 4 (ख) 6

(ग) 3 (घ) 1 ( )

(j) ग्यारहवें गुणस्थान में उदीरणा होती है-

(क) 8 कर्मों की (ख)07 कर्मो की

(ग) 5 कर्मों की (घ) 1 कर्म की ( )

**प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :-** **10x1 = (10)**

(a) आसुर शब्द का अर्थ नीचे के देवों के उत्पत्ति-स्थान के लिए प्रयुक्त है। ( )

(b) जमाली ने द्वैक्रियवाद मत प्रवर्तन किया। ( )

(c) 'घोरा मुहुत्ता' में मुहूर्त का अर्थ मृत्यु (काल) लिया गया है। ( )

(d) ''मलावधंसी'' शब्द का अर्थ आत्मा है। ( )

(e) उपशम केवल मोहनीय कर्म का ही होता है। ( )

(f) जीव एक समय तक अनाहारक रह सकता है। ( )

(g) 9वें गुणस्थान में 7 कर्मों की निर्जरा होती है। ( )

(h) अमर गुणस्थान 3,12,13 है। ( )

(i) 'स्यात्' शब्द का अर्थ सम्भवतः नहीं होता है। ( )

(j) 'पाणं' शब्द का अर्थ पेय पदार्थ होता है। ( )

**प्र.3 मुझे पहचानो :-** **10x1 = (10)**

(a) मैंने त्रैराशिकवाद का प्रवर्तन किया था। .....

(b) मुझे कोई शीघ्र प्राप्त नहीं कर सकता। .....

(c) अंतिम श्वांस तक मेरी आकांक्षा करनी चाहिए। .....

(d) क्षायिक सम्यक्त्व के एक समय पहले मेरी स्थिति रहती है। .....

(e) वस्तु के भेद अथवा प्रकारों को कहते हैं। .....

(f) मैं मन और इन्द्रियों की सहायता से होता हूँ। .....

(g) मुझमें समकित मोहनीय के उदय की नियमा है। .....

(h) मुझमें चार आत्माएँ होती हैं। .....

(i) मुझमें भगवान महावीर ने अनेकान्त दृष्टि से प्रश्नों के समाधान प्रस्तुत किये। .....

(j) मैं कम से कम पाँच प्रहर का होता हूँ। .....

**प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए।** **14x2 = (28)**

(a) **दस अंग कौनसे हैं जिनको देवलोक से आया हुआ जीव प्राप्त करता है ?**

.....

.....

(b) **'मइमं गहाय' के दो अर्थ कौनसे हैं ?**

.....

.....

(c) **'चरे पयाइं परिसंकमाणो' की दो व्याख्याएँ लिखिए।**

.....

.....

(d) **अधिगमज सम्यग्दृष्टि किसे कहते हैं ?**

.....

.....

(e) **तन्निसर्गादधिगमाद्वा अथवा तत्त्वार्थ श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

(f) **तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

(g) **अवाय किसे कहते हैं ?**

.....

.....

(h) **ऋजुसूत्र नय किसे कहते हैं ?**

.....

.....

(i) **गुणस्थानों में सत्ता द्वार का कथन कीजिए।**

.....

.....

(j) **गुणस्थानों में समकित द्वार का कथन कीजिए।**

.....

.....

(k) **दूसरे गुणस्थान वाले पाँचवें गुणस्थान वाले से असंख्यात गुणा क्यों हैं ?**

.....

.....

(l) **स्यात् शब्द का अर्थ क्या है ?**

.....

.....

(m) **भगवती सूत्र में सुप्रत्याख्यान किसे कहा गया है ?**

.....

.....

(n) **एकलठाणे की विशेषता लिखिए।**

.....

.....

**प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : -** **14x3 = (42)**

(a) **एवमावट्टजोणीसु, पाणिणो कम्म-किव्विसा।**
**न निविज्जंति संसारे, सव्वट्ठेसु व खत्तिया।। का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(b) **चउरंगं दुल्लहं नच्चा, संजमं पडिवज्जिया।**

**तवसा धुयकम्मंसे, सिद्धे हवइ सासए।।**

**अथवा**

**भोच्चा माणुस्सए भोए, अप्पडिरूवे अहाउयं।**

**पुव्वं विसुद्ध सद्धम्मे, केवलं बोहि-बुज्झिया।। इस गाथा का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(c) **वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते, इमंमि लोए अदुवा परत्था।**

**दीवप्पणट्ठेव अणंतमोहे, नेआउयं दुट्ठुमदट्ठुमेव।। गाथा का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(d) **''छंद निरोहण'' की तीन व्याख्या लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(e) **नामस्थापना द्रव्य भाव तस्तन्न्यासः का विवेचन कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

(f) **मतिज्ञान के कुल कितने भेद होते हैं ?**

.....

.....

.....

.....

(g) **मतिज्ञान की अपेक्षा श्रुतज्ञान की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(h) **अवधि और मनःपर्याय ज्ञान में क्या अन्तर है ?** **अथवा**

**प्रथम तीन ज्ञान विपरीत क्यो होते हैं ?**

.....

.....

.....

.....

(i) **तेजस-कार्मण शरीरों की विशेषताएँ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(j) **गुणस्थानों की अपेक्षा से बंध द्वार का उल्लेख कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

(k) **गुणस्थानों के आकर्ष द्वार का उल्लेख कीजिए ।**

**अथवा**

**गुणस्थानों के अन्तर द्वार का उल्लेख कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

(l) **सप्तभंगी के सात विकल्प लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(m) **प्रत्याख्यान की प्रथम तीन विशुद्धियों को समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

(n) **प्रत्याख्यान करने के कोई तीन लाभ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....